Sanchar Sutra | ISSN NO.- 2584-1769

कथामुक्तावली में परिवार, समाज तथा राष्ट्र के पथ- प्रदर्शक के रूप में नारी की भूमिका

मानसी डागर

स्नातक शोधार्थी

मिरांडा हाउस महाविद्यालयः , दिल्ली

सारांश

कथामुक्तावली की कथाओं में मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को स्पष्ट किया गया है। आधुनिक संस्कृत कथा साहित्य में कथामुक्तावली का स्थान अत्यंत ही महत्वपूर्ण है। यह पण्डिता क्षमाराव द्वारा रचित है। कथामुक्तावली लघु कथाओं का संग्रह है जिसमे वर्तमान में फैल रहे अंधविश्वास, कुरीतियों आदि का स्पष्ट रूप से वर्णन किया गया है। इन कथाओं में जो भी सामाजिक रूढ़िवादिता है , उनका वर्णन किया गया है। साहित्य प्राचीन हो अथवा आधुनिक उसमे स्त्री केवल परिवार तक ही सीमित नहीं है अपितु समाज तथा राष्ट्र के प्रति भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका को निभाती है। स्त्री केवल एक प्रेरणादायक शक्ति नहीं है, अपितु वह प्रगति तथा सुरक्षा की नीव है। भारतीय साहित्य में अनेक ऐसी महिलाये है जिन्होंने समाज तथा राष्ट्र के कल्याण के लिए अपना संपूर्ण जीवन समर्पित किया है। उन आदरणीय महिलाओं में से एक है 'पण्डिता क्षमाराव' जिन्होंने अपनी कृतियों के माध्यम से नारी के संपूर्ण व्यक्तित्व को केवल परंपरागत सूत्र में नहीं बाँधा अपितु उसे एक दृढ़ तथा विवेकपूर्ण रूप में चित्रित किया। उनकी सभी रचनाओं में से एक रचना 'कथामुक्तावली' है, जिसमें सामाजिक रूढ़िवादिताओ का वर्णन किया गया है, जिसमें की स्त्री को पथ – प्रदर्शक के रूप में स्थापित किया गया है। जीवन के तीन स्तरों परिवार , समाज तथा राष्ट्र को नारी एक उचित तथा सैद्धांतिक गति प्रदान करती है।

भूमिका

भारतीय सभ्यता में आदिकाल से ही स्त्री सम्मान का पात्र रही है। वैदिक काल से आधुनिक काल तक आते-आते अनेक संघर्षों के साथ स्त्रियों की स्थिति में बहुत परिवर्तन हुए। वैदिक काल में नारी को 'शक्ति', 'देवी' आदि के रूप में स्वीकार किया गया है। मध्यकाल तक आते -आते स्त्रियों की स्थिति अत्यंत दयनीय होती चली गई। उनको एक पशु की भाँति घर के भीतर कैद रखा जाता था। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् पुरुषों के समान ही महिलाओं को भी अधिकार प्रदान किए गए। उन्नीसवी शताब्दी के पश्चात् ऐसे अनेक अधिकार महिलाओं के लिए पारित किए गए जिससे कि उनके अधिकारों का हनन न हो। क्योंकि महिलाओ पर अनेक

प्रकार के अत्याचार होते थे जैसे कि भ्रूणहत्या, परिवार तथा समाज द्वारा शिक्षा पर रोक, बाल विवाह आदि। महिलाये राष्ट्र की प्रणेता होती है। परिवार, समाज, राष्ट्र के सतत विकास के लिए स्त्रियों की भूमिका अत्यंत सर्वोपरि है। समाज के द्वारा अनेक प्रकार से नारी को बहिष्कृत करने का प्रयत्न किया गया किन्तु उसने अपने धैर्य, करुणा, आत्मबल के आधार पर उसे सदैव कर्मठ बना रखा।

आधुनिक संस्कृत साहित्य में नारी के विविध स्वरूपों को नवीन दृष्टिकोण प्रदान किया गया है। आधुनिक संस्कृत कथा साहित्य में 'कथामुक्तावली' में विशेष रूप से महिलाओं का यथार्थ तथा मनोवैज्ञानिक चित्रण प्रस्तुत किया गया है। प्रत्येक कथा में वह परिवार, समाज तथा राष्ट्र के प्रति अपनी विशेष भूमिका निर्वाह करती है। परिवार की दृढ़ता तथा समन्वय वह नारी की अभ्यंतर शक्ति पर आश्रित होता है। समाज में निहित सामाजिक रूढ़िवादताओं, कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष किया तथा नवीन सोच को उजागर किया। परिवार तथा समाज के साथ – साथ राष्ट्र के प्रति भी नारी की विशेष भूमिका दृष्टिगोचर होती है। पंडिता क्षमाराव की रचना 'कथामुक्तावली' में राष्ट्र के प्रति नारी का प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से योगदान दिखाई देता है, जहाँ वह केवल परिवार तथा समाज की सीमाओं में ही सिमट कर नहीं रहती है अपितु राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों का संचालन भी करती है।

उद्देश्य

1. इस शोध पत्र के माध्यम से नारी के पूर्ण स्वरूप का विश्लेषण किया जाएगा ।
2. नारी की पारिवारिक भूमिका, सामाजिक दायित्व को समझा जा सकता है।
3. नारी के मनोवैज्ञानिक पक्ष को समझा जाएगा।
4. आधुनिक साहित्य तथा नारी के मध्य संबंध स्थापित करना।

पद्धति

इस शोध पत्र में **वर्णनात्मक पद्धति** के द्वारा कथा एवं पात्रों की स्थिति को स्पष्ट करने के लिए इसका प्रयोग किया गया है , जो विश्लेषण का आधार बनती है।

इस शोध पत्र में पात्रों के व्यवहार के पीछे छिपी मानसिक प्रक्रियाओ के अध्ययन के कारण **मनोवैज्ञानिक पद्धति** का प्रयोग हुआ है।

परिणाम

कथामुक्तावली में स्त्री को केवल करुणा, दयावान पात्र के रूप में चित्रित नहीं किया गया है अपितु उसे एक सशक्त शक्ति के रूप में चित्रित किया गया है।

1. पारिवारिक स्तर पर वह परिवार की आधारशिला है। प्रत्येक दशा में वह अपना धैर्य नहीं खोती, तथा परिवार को एकता के सूत्र में बाँधे रखती है।
2. सामाजिक स्तर पर वह कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठाती है, तथा समाज को एक नई दिशा प्रदान करती है।
3. राष्ट्रीय स्तर पर नारी का योगदान प्रत्यक्ष न होकर अप्रत्यक्ष है , क्योंकि परिवार तथा समाज के मूल्य राष्ट्र के चरित्र का निर्माण करते है।

बीज शब्द

अंधविश्वास , कुरीतियों , सामाजिक रूढ़िवादिता , नैतिक मूल्य ।

पंडिता क्षमाराव

आधुनिक काव्य परंपरा में पंडिता क्षमाराव का स्थान अतुलनीय है। इनका जन्म 4 जुलाई ,1890 ई. में पुणे, महाराष्ट्र मे हुआ था। इनके पिता का नाम शंकर पांडुरंग तथा माता का नाम उषादेवी था। इनके पति का नाम राघवेंद्रराव था जो की एक चिकित्सक थे। इन्होंने संस्कृत भाषा में अनेक रचनाएँ की जो कि इस प्रकार है-

- सत्यग्रहगीता — रेवा की कथा
- उत्तरसत्यग्रहगीता — कटुवीपाककथा
- स्वराजविजयः — वीरभा
- मीरालहरी — कथापञ्चकम्
- तुकारामचरितं — कथामुक्तावली
- श्रीरामदासचरितं — शंकरजीवनाख्यानम्
- श्रीज्ञानेश्वरचरितं — विचित्र परिषद्यात्रा
- ग्रामज्योतिः

कथामुक्तावली – कथामुक्तावली 15 लघु कथाओं का संग्रह है , यह 15 लघु कथाए इस प्रकार है –

प्रेमरसोद्रकः — नजमदिलेलः

परित्यक्ता — विधवोद्वाहसङ्कटम्

मिथ्याग्रहणम् — क्षणिकविभ्रमः

वृत्तशंसिच्छत्रम् — निशीथबलिः

हैमसमाधिः — मत्स्यजीवी केवलम्

मायाजालम् — तापसस्य पारितोषिकम्

स्वाप्निकव्यामोहः — आत्मनिर्वासनम्

शरदृलम्

- **परिवार के पथ – प्रदर्शक के रूप में नारी - 'यत्र नार्यस्तु पूजस्ते, रमन्ते तत्र देवता'** अर्थात् जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है , वही देवताओं का निवास स्थान होता है। इसी कारण से भी स्त्रियों को प्राचीन भारतीय समाज मे सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। मानव समाज मे 'परिवार' ही मूलभूत आधार होता है। भारतीय परिवार में सभी लोग प्रेमभाव से एक दूसरे के साथ रहते है। किन्तु वर्तमान में भारतीय परिवार में कई प्रकार के परिवर्तन आदि हो रहे है। लेकिन इन परिवर्तनों का एक सकारात्मक पहलू यह भी है कि जो महिलाये घर से बाहर काम करती है उनको परिवार

की ओर से पूर्णतः सहयोग प्राप्त हो रहा है। शहरों में यह परिवर्तन अत्यंत शीघ्रता से दृष्टिगोचर हो रहा है किन्तु गाँवो तथा कस्बों में यह अभी भी अपनी चरम सीमा को प्राप्त नहीं हुआ है।

आधुनिक भारतीय समाज में महिलाये परिवार की नीव है। आज कल वह पुरुषों के समान ही घर के बाहर कार्य करने में सक्षम है ,उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही है। परिवार के पालन पोषण में जितना सहयोग एक पुरुष का होता है उससे ज्यादा एक महिला का होता है। महिलाओ में सामाजिक तथा राजनीतिक चेतना के साथ- साथ शिक्षा का प्रचार – प्रसार भी अत्यंत तीव्र गति से हुआ है। इस प्रकार से यह पूर्णतः स्पष्ट है कि एक पत्नी ने परिवार मे सेविका के स्थान पर एक सहयोगी की भूमिका निभाई है।

जिस प्रकार से रथ के एक पहिये के बिना वह गतिशील नहीं हो सकता है, उसी प्रकार से परिवार मे नारी के अभाव मे वह कमजोर हो जाता है, उसका कोई अस्तित्व नहीं रहता है। वह परिवार में केवल गृहिणी नहीं होती, अपितु वह पत्नी, पुत्री, माता, बहन आदि होती है तथा सभी प्रकार के दायित्वों का पूर्णरूप से निर्वाह करती है। तथा परिवार को एकता के सूत्र में बाँधे रखने का कार्य भी एक स्त्री के द्वारा ही किया जाता है।

 # कथामुक्तावली में नारी- परिवार के पथ प्रदर्शक के रूप में

i. **परित्यक्ता कथा के अनुसार –** 'परित्यक्ता' कथा में स्त्री को अत्यंत ही हृदयस्पर्शी तथा मनोवैज्ञानिक रूप से चित्रित किया गया है। कथा में नायिका को उसके पति के द्वारा त्याग दिया जाता है, जो कि समाज में अत्यंत ही अपमानजनक स्थिति है।

- **पारिवारिक स्तर पर-** प्राचीन भारतीय समाज की मूल इकाई परिवार ही है। कथा के अनुसार जब नायिका का वैवाहिक बंधन टूट जाता है, तब वह अपना संतुलन बनाए रखती है तथा कमजोर पड़ने के अतिरिक्त ,धैर्य से स्थिति का सामना करती है। अतः इस स्थिति से स्पष्ट है कि पारिवारिक संबंधों से सम्बद्ध संकट के समय भी एक स्त्री पथ – प्रदर्शक बन सकती है। तथा यह सिद्ध करती है कि एक स्त्री को सम्मान बाहरी पारिवारिक संबंधों से प्राप्त नहीं होता है अपितु मन की आंतरिक शक्ति से पुनः प्राप्त हो जाता है।

ii. **विधवोद्वाहसङ्कटम् कथा के अनुसार –** इस कथा में सामाजिक कुरीतियों जैसी कि विधवा विवाह का अत्यंत ही विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है।

- **पारिवारिक स्तर पर –** प्राचीन काल से ही एक विधवा स्त्री को परिवार पर बोझ के समान देखा जाता है। उनको अशुभ माना जाता था तथा उनके अधिकारों का हनन किया जाता था। इस प्रकार लेखिका यह सिद्ध करती है कि परिवार का उत्थान तभी संभव है जब एक विधवा स्त्री को भी सभी प्रकार के समान अधिकार प्राप्त हो।

इस कथा में पार्वती नामक विधवा स्त्री सभी के द्वारा बहिष्कृत किए जाने पर भी अन्याय के सहन करने के अतिरिक्त उसके विरुद्ध साहस दिखाती है तथा अपने जीवन का निर्णय स्वयं लेती है। लेखिका के द्वारा इस कथा में एक स्त्री को कमजोर प्रवृत्ति का न दिखाते हुए एक दृढ संकल्प वाली दिखाया गया है।

- **समाज के पथ – प्रदर्शक के रूप में नारी**

लोगों का एक ऐसा समूह जिसमे कि उनके मध्य पारस्परिक संबंध तथा एक दूसरे के प्रति समर्थन की भावना हो उसको समाज कहा जाता है। प्राचीन काल से आधुनिक काल तक सृष्टि की नीव नारी है। वह समाज में प्रधान है तथा प्रशासनिक, राजनीतिक, सामाजिक कार्यों में भी अपना संपूर्ण योगदान देती है।

समाज में महिलाओ का दायित्व सामाजिक तटस्थता, मानव विकास को प्रोत्साहित करने तथा नीति-संचालित परिवर्तन पर विशेष रूप से प्रभाव डालने के लिए अर्पित है। वह आर्थिक विकास तथा शिक्षा में अपना योगदान देती है। नारी केवल घर तथा पारिवारिक संबंधों तक ही सीमित नहीं है अपितु वह अपने विचार, व्यवहार से समाज को विकसित करने में अपना योगदान देती है। समाज में एक सकारात्मक सोच को विकसित करने का कार्य भी एक नारी के द्वारा ही किया जाता है। इस प्रकार से कहा जा सकता है कि वह समाज को दिशा- निर्देश देने वाली एक शक्ति के रूप में है।

 # कथामुक्तावली में नारी – समाज के पथ- प्रदर्शक के रूप में

i. **'परित्यक्ता' कथा सामाजिक स्तर पर –** प्रायः समाज में जब कोई स्त्री त्याग दी जाती है तो वह सभी के लिए हीनता का पात्र बन जाती है। वह अपने परिश्रम तथा स्वाभिमान से समाज की रूढ़िवादी मानसिकता को चुनौती देती है। इस कथा में नारी कमजोर नहीं अपितु सक्रिय होकर सभी का सामना करती है। पति के द्वारा त्याग दिए जाने पर भी वह सम्मान के साथ अपना जीवन व्यतीत करती है। वह अपने विवेक, आत्मविश्वास से समाज की सोच मे विस्तार करने का संदेश देती है।
ii. **विधवोद्वाहसङ्कटम् कथा सामाजिक स्तर पर -** यह कथा सामाजिक परिवर्तन की दशा में अत्यंत ही महत्वपूर्ण है। विधवा विवाह व्यक्तिगत न होकर समाज से सम्बद्ध है। कथा में अनेक लोग विधवा विवाह के पक्ष में है जिससे यह स्पष्ट होता है कि सभी के द्वारा विधवा विवाह का विरोध नहीं किया जाता था। इस कथा में पार्वती नामक स्त्री इस अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाती है तथा अपने जीवन के निर्णय को लेने में सक्षम होती है। इस प्रकार से एक स्त्री समाज- सुधार में पथ-प्रदर्शक के रूप में अपनी भूमिका का निर्वाहन करती है।

➢ **राष्ट्र के पथ- प्रदर्शक के रूप में नारी की भूमिका**

लोगों के समूह से राष्ट्र का निर्माण होता है। राष्ट्र तभी सशक्त बनता है जब उसमे रहने वाले नागरिकों में अच्छे गुण निहित होते है। इन समस्त नागरिकों में एक स्त्री की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। एक नारी सर्वप्रथम एक माँ के रूप में राष्ट्र का निर्माण करती है। नारी का शिक्षित होना, राष्ट्र निर्माण में अपनी विशेष भूमिका निभाता है। एक स्त्री समाज में समानता तथा न्याय की भावना को विकसित करती है। जब वह अन्याय के विरुद्ध लड़ती है तो वह समस्त राष्ट्र का मार्ग प्रशस्त करती है। राष्ट्र तभी उन्नत अवस्था को प्राप्त करेगा जब समाज में सुधार संभव हो। इसलिए एक नारी प्रत्यक्ष रूप से न होकर अप्रत्यक्ष रूप से राष्ट्र को एक गति प्रदान में सहायक होती है।

 # कथामुक्तावली में नारी – राष्ट्र के पथ- प्रदर्शक के रूप में

i. **'परित्यक्ता' कथा राष्ट्रीय स्तर पर –** इस संपूर्ण कथा में नायिका सम्मान तथा नैतिकता का मार्ग नहीं छोडती है। वह सभी को यह संदेश देती है की आत्मसम्मान तथा नैतिकता से जीवन व्यतीत करने से ही एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण हो सकता है। अगर एक स्त्री सशक्त होगी तो वह अपनी भावी पीढ़ी को भी सक्षम बनाने में समर्थ होगी।
ii. **विधवोद्वाहसङ्कटम् कथा राष्ट्रीय स्तर पर –** इस कथा के अनुसार पार्वती नामक स्त्री सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध लड़ती है। जब समाज रूढ़िवादी मानसिकताओ तथा कुरीतियों से मुक्त होगा,

तभी एक राष्ट्र प्रगति के मार्ग की ओर अग्रसर होगा। नारी समाज सुधार की प्रेरणा शक्ति बनकर राष्ट्र को एक नवीन दिशा प्रदान करती है।

निष्कर्ष –

'कथामुक्तावली' आधुनिक संस्कृत साहित्य की महत्वपूर्ण रचना है जिसमे कि स्त्रियों के विविध स्वरूपों का अत्यंत ही प्रभावी ढंग से उल्लेख किया गया है। पंडिता क्षमाराव ने इन कथाओ के माध्यम से नारी के संपूर्ण व्यक्तित्व को उचित प्रकार से प्रस्तुत किया है। इन कथाओं में नारी कमजोर, त्याग का पात्र नहीं है अपितु एक जागरूक, सशक्त, व्यक्ति के रूप में है। अतः यह निष्कर्ष निकलता है की एक महिला, परिवार, समाज, तथा राष्ट्र इन तीनों स्तरों पर अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन करती है। वह केवल स्वयं के जीवन को ही नहीं अपितु समाज तथा राष्ट्र को प्रगति की ओर ले जाती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

i. कथामुक्तावली [पंडिता क्षमाराव]
ii. आधुनिक संस्कृत साहित्य के नए भावबोध [मंजुलता शर्मा]
iii. बीसवी शताब्दी का संस्कृत लघुकथा साहित्य [रुचि कुलश्रेष्ठ]
iv. कवयित्री – कंठाभरणम् [सुषमा कुलश्रेष्ठ]
v. आधुनिक संस्कृत कवयित्रियां [अर्चना कुमारी दुबे]